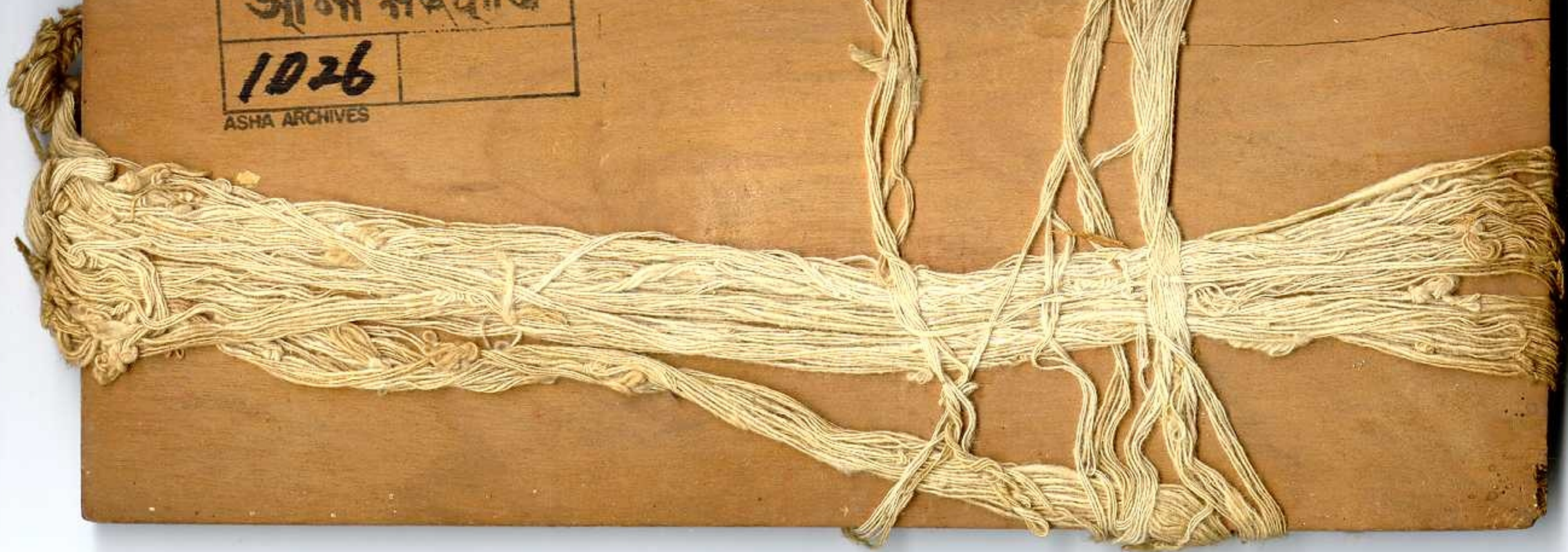




आशा अरु काशि

1026	
------	--

ASHA ARCHIVES



ASBA ARCHIVES

महाराष्ट्र

1.0226

ASBA ARCHIVES

धजंनयो मुकुनवासिना आका वाकि
स्वाननस्योकोनम
नोपुजल
नयातोतना

थडी रजत्र.



उ.पाल.योयोथास.तय.ज्य.

नलापानलखोर

सगंधी

कलडा

पाई.
कंभ.

उय.
कंभ.

कटा.
कंभ.

याउर.
कंभ.

खड



जजमान

पावा

पंचलि.

वलि.

त्रिवलि.



लथल. शंभ.

अर्धपान.

अर्धा

पुजामं.

नवह.

नवह.

नवह.

मिया.नोन.वोयग्र

पुजावारि.

जजमान.



सक तां चेदि.वोयवाय.धुनय.द्रव्यनैवय.शोधन.देज्ञान.चीत्वांखेल्य
जजंका.पंचपटा.कर्तपटा.अडार.सकटां.हाय.पुडंका.पुजायाय.॥

नलासोन.यापरिधाति.

अतमीन.संयापरिधाति.

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अथ नवला मने विधि ॥ मालको पत्र वासन चोय ॥ मा-
 को सोधन पाय ॥ फिला पत्र दो हो ले चिथ छान खेले ॥ वेला जलना मताय
 जो नाव कु मन देवाथिय ॥ अदे त्यादी ॥ यावत् चद्रार्क मारु तो मारु मग्नी जला
 वह तावत् सचि रंकारं चर स्थाप्य स्थिरो भव ॥ स्थिरो भव महो देवि देवाना मनु-
 जाधिपे यावत् समिपय तं तावत् स्थिर मा चरेत् अस्मत्तु ब्रह्म सिद्धि जय काम-
 नया श्री गणेश देवि पारा रा स्थान चर स्थाप्य स्थिरो भव चर स्थाप्य स्थिरो भव ॥ ॥
 नाय हो ले नमस्कार पाय ॥ पूजा आरंभ पाय नो सिम न्या मयाय ॥ सुग्या द्योया
 य ॥ ॐ मद्यादी ॥ अस्मत्तु ब्रह्म सिद्धि जय काम नया पापान् स्थापन यथा मक्ति श्री
 उग्र चंडा देव्या च न निमित्तार्थ कर्तुं श्री सुग्याय अर्घ्य नमः ॥ पुष्पां नमः ॥ गुरु

हलष प्रे सर्वजन्मोह नौ पादु की पुजयामी ॥ १ ॥ वलि ॥ विदु
नमस्कार भुत सुद्धी आत्म पुजा या य मोह नि फय मालीनी कोने ॥ मोह
पंचवली वीय ॥ मपुरास नाय पादु कां पुजयामी ॥ श्रीहिं कुल पुत्र वरु के
नाथाय पादु कां पुजयामी ३ वली ॥ नरासनाय पादु कां पुजयामी ॥
आक्षिप्त क्षेत्र पाताय पादु कां पुजयामी ३ वली ॥ मिहासनाय पादु
कां पुजयामी ॥ यायोगिनी भो पादु कां पुजयामी ३ वली ॥ प्रेता म
नाय पादु कां पुजयामी ॥ हलष प्रे सिद्धि चामुद ये पादु कां पुजया
मी ३ वली ॥ सुसासनाय पादु कां पुजयामी ॥ गांगी गंगे श्रीक
लगने शाय पादु कां पुजयामी ३ वली ॥ तर्जनी दंड पोनी काद्य ग
जमुदा दसयेत् ॥ वीठ ॥ मय यद्यय ॥ जप ॥ श्रीहिं ॥ क्षी ॥ या ॥ हंस

षफ्रे ॥ जलो ॥ लोत्र ॥ देवी प्रत्रं वि सा र्थ त्वह नै सप्तिक रं क्षेत्र पा लं त्रि न त्र
या देवी योगिनी वै स कं लभ य हरि रक्त चामुदिका र्था नो मी श्री वि
द्यी के सपरम सुष करं पंचक यदु न च ल च के पुज का नां हरतु भ य स
दा र्म सदा यत्न करोतु ॥ पंचवल्या च न विधौ तन स र्व विधी परि पूर न पल ॥ वि
दु ॥ श्री संव लेति ॥ माल को नि त्तन ॥ विशेष पुजा न्यास ॥ मृत्यु हरे अस्त्रा य फ
ट ॥ श्री हिं राज प्रदे अंगु स्ता भ्यां नमः ॥ हलष प्रे उग्र चंद तर्जनी भ्यां स्वाहा ॥ रि
पुमर्द निमध्य मा भ्यां वी षट् ॥ दू प्रे सदा रक्ष र भनामी का भ्यां दू ॥ न्यामी जूं स
कनी भ्यां भ्यां वी षट् ॥ मृत्यु हरे कर न ल हं पृष्ठा भ्यां अस्त्रा य फ ट् ॥ श्री हिं रा
ज प्रदे हृद या य नमः ॥ हलष प्रे उग्र चंद मिर मे स्वाहा ॥ रिपु मर्दनी शि र्वा य व

बट ॥ दुं फें सदारक्ष कव चाय दुं ॥ तामांजुं स नेत्र त्रयाय वैष ॥ मृपुहरे
 भलाय फट ॥ आसन ॥ आधार मक्तये पादु का पुजयामी ॥ अनंतामनाय ॥
 कंदाय ॥ नाराय ॥ पाराय ॥ पत्राय ॥ केसराय ॥ करिण काय ॥ पद्मासनाय
 सिंहासनाय ॥ महीषासनाय ॥ मुं गामनाय ॥ शिंभामनाय ॥ ध्याता ॥ उग्र
 चंभमहादेवि ध्यायेत् भगवति शिवा मप्रवामी कशभा मविद्युत् कोटी म
 मप्रभा ॥ पीतावक्ष्म थलाभौ गात्रिनेत्रा चारु हासिनी किरिती कुंडला
 काली केसरा मणि नौपता ॥ रुक्माला विचित्रे शा हा कमाला वलविते म
 खाद मनुजा कांता दिव्य वस्त्रां गभुषीता ॥ खड्ग काशो तथा चक्रं वज्रं क
 सवराधरं डमरु मलपात्रं कुक्षि रो रो विराजिता फेट कंधन हर्षं च गज खंभ

शोजितं ॥ पार्श्वतर्जनी हस्तां च खर्गं द्वी के मपा म कं विंदु मृदा तथा मिद्वि
 सिंहासनोपरि स्थिता ॥ यव ध्यात्वा महादेवि महा भगवती नमोस्तुते ॥ मे
 या यो ह म हस्तां च खर्गं गडमरु कं विना ॥ रुद्र चंभं उग्र चंभं च चंभं रो शाचं
 दुनाइ का चंभं चंभं वली चंभं चंभं पाति चंदी कानव मो चोग्र चंभं चंभं चंभं
 स्था ग्रीष्मो चिता ॥ लोच नाभा ह नो कृष्णानी ला कुला च धु म कापी चंभं पाठ
 राशे या भाली धस्था ह रास्थि नामा हे अष्ट पुमान रा क्रि तत्कर ग्रह पृष्ठ का ॥
 स्था प्यादु गे रा वृतेन उग्र चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं
 मोस्तुते ध्यानं पृष्ठं पादु का पुजयामी आवाहन दो वदना नी ॥ अंजं जली ॥ ॐ
 हिरण्य प्रदेह सवर्षं उग्र चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं चंभं

रेनमस्वाहापादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ कलि गैह २४५। हायोनी मुद्रा दर्शयत
परिवारपूजा ॥ अश्वारूढ चंदोये पादुकां पुजयामी ॥ इह प्रचक्षय पादुकां
पुजयामी ॥ ४५ चंडो गायै पादुकां ॥ ऋ ऋ चंडनामिको य पादुकां ॥ लं
चंडोये पादुकां ॥ ऐ ऐ चंडवत्यै पादुकां ॥ ओ ओ चंडरूपायै पादुकां ॥
मं मं अति चंडी काय पादुकां ॥ एव वली गुरु २ स्वाहा योनि मुद्रा दर्शय
त ॥ विंदु ॥ कात्यायनी पूजा ॥ आसन ॥ पद्मा मनाय पादुकां पुजयामी
मिहा मनाय पादुकां पुजयामी ॥ महिषा मनाय पादुकां पुजयामी ॥ त्रि
यांजलि ॥ ३ ॥ श्री समलुगै चंदिकेत्यो यानी पादुकां पुजयामी ॥ ३ ॥ व
लि गुरु गुरु स्वाहा ॥ योनि मुद्रा दर्शयत ॥ नृवेश्वरी पूजा ॥ पद्मा मना

यपादुकां ॥ मिहा मनाय ॥ महिषा मनाय ॥ त्रियांजली ॥ रु सक्षम
नवरयं भगवती चंडी कात्यायनी नृवेश्वरी पादुकां पुजयामी ॥ ३ ॥ व
लि गुरु गुरु स्वाहा योनी मुद्रा दर्शयत ॥ विंदु ॥ मिहिलक्ष्मी आसन
महाप्रेता मनाय पादुकां पुजयामी ॥ हामा हाह दा मना देवे मना
मम त्रियांजली ॥ ओ ह्रीं हूं ह्रीं हूं को नमः श्री मिहिलक्ष्मी देवी पादु
कां पुजयामी ॥ ३ ॥ वली गुरु गुरु स्वाहा ॥ त्रिपी सा योनी फाल मुद्रा
दर्शय ॥ विंदु ॥ थापनः नमी चालनं नृ ॥ कलम पूजा आसन ॥ वृषा
मनाय पादुकां ॥ मिहा मनाय पादुकां ॥ त्रियांजली ॥ रु सक्षम नवरयं
कल वृक्ष महा मना मना हन म कलतिर्थ मत्र देवता कलातत्वाधिपत पेश

हृदयमनवरयी श्रीमपुनकलसायपादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ वली धेनुमुद्रा
 दत्तयो ॥ विदुः कुंभपुजा ॥ ऐं कारासनायपादुकापुजयामी ॥ त्रिपुनलो ॥ ऐं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रस फल प्रस फल चोर चोर तनु तर तर तनु रूप रूप चट चट प्र
 चट प्र चट केह केह वम वम धम धम ध्यान ध्यान यवि ध्यान यवि ध्यान यवि
 वि धी वि धी डं डं डं फेर श्री कल कुभाये पादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ वली यो
 निमुद्रा ॥ विदुः ॥ सगुणपुजा ॥ हृदयमनवरयी हृदयमनवरयी अह्व
 था मा हृदयमनवरयी वी भ्यो पादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ वली धेनुमुद्रा ॥ विदुः ॥
 निकनपुजा सकती धुन का व वली मले ॥ समय वली विय ॥ वली मलयका
 व्रतया व्रत दोनो ऐं सर्वपी थोपपिठानि द्वारो पद्धार मेव चक्षत्र सर्व देह सर्व

योगागलस्थिता ॥ योगीनी योगविरेदा सर्वतत्रतमागइदं सर्वम
 हाचकै श्रीनाथोवरदोमम ॥ येन तया शासनं देवि गुरु पादार्च हो रता ॥ सर्व
 सिद्धिप्रसादो मे देवि ते मा भवेत्तदा ॥ वीरुना योगीनी नीचयदेवति महि
 तलेनेतत्रां वलि दे वि समया चार मेल के श्रुती स्मृती मन प्रखी मा समे दो
 स्थिजीवीत ॥ निकतयस्तु दुष्टाना योगी गन सकलो ॥ कुरुका दी कल्पया
 नी दुर्निमीता दुभाषीता ॥ ओं कारादी श्रुयेपी वाच्य माला प्रकिं नितः ॥ ओं अधि
 धातुसंदो हाद सा मुविद सा मुच महि पाताल व्रत दे सर्व स्थाना तरे भव ॥ यो
 गी योग युक्ता त मा तनेति धूती साधका ॥ कर्म मुविद दास तेति धूती देव
 तासी द्वाध प्रत्र काचा प्या साधका धीति सायिने नगरे वाथ गा मे वा अतर्वा वा

को भागि पुजा ॥ ककारादि न्यास ॥ आधारादुपकारनायपादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ वली धेनुमुद्रा ॥ विदुः ॥
 क मल वरयु को भागि को भागि का विवे पा. पु. ॥ ३ ॥ वली ॥ भागि मुद्रा दर्शयंत ॥ विदुः ॥ वरयु देव ॥

को भागि पुजा ॥ ककारादि न्यास ॥ आधारादुपकारनायपादुकापुजयामी ॥ ३ ॥ वली धेनुमुद्रा ॥ विदुः ॥

संख्या १२२३

ASHA ARCHIVES

श्री श्री लक्ष्मी

1026

ASHA ARCHIVES

लरिहये॥ वापी कपैक दृष्टे वा इम लाने मातृ मं उले॥ नाना रूप धराने
विवरु मादि विधानी च॥ तेन सर्व प्रियं तं नृणां बलि उदु तं मे व नः॥
सर्व नाग तीया हं ते यः सर्व मे तत् फल प्रदं जन्म या के प्री॥ यत करि
ष्यामि यत्नं कर्म॥ वली पुष्पा प्रदानेन सनं यमममचीती का॥ सर्व के
प्रारिण सिद्धि नु सर्व दोष प्रमो न मे शिव शक्ति सु सा दो मे श्री कृ कारो रू न मा
मे हं॥ इति सप्तमं बलि॥ ॥ समस्त मन्त्र पीठे ती॥ उक्ता नृ के ती॥ विंदु॥
देव लो नादी चदन मिदुरः पुष्पा धूप दीप सपय ह्यय मित्रा फल ता य नो
ता व चीने॥ यावत् भास भो स्त्वर स्य प्रभु नति भवता यावत् कस्तु र्ग गाय वत्
गो गो ग रागा ~~या~~ गग रागा ग रागा पति गो पती वा ग तो इः यावत् वल्ला पि

ना की हरी कम लजलं वेद मिद्रा त वा रागी ता वत्तं पुत्र पौत्र स्वजन परी वृ
ता व द्र तीरा ज्यल क्ष्मी॥ सुपुनि यत्नं वरदा च वं त॥ ता य हो ले जप गाय॥ मरु
ले दय कं लो ज या यः॥ विसे घट्टो त्र॥ या देवि मधु के दभ प्रमथी नी या व
कु मं रु के नीः या मा ता मू ही या मुर क्षय करि यार क्त वी जा श्रया॥ या ता म
न नि दे न प दल नी यो दे व दे वा कि नीः सा दे वी म म लक्ष्मी क्षिरा भु जै र क्षं म
म रा च दी का॥ व र्णा गो ले च ना भा अरु रा त व नि ना कृ कृ निला हि मा भा धु मा
भा ह्ये व नं स फटी कम ति नि ना ना पू प ने स्त्री ता मा॥ पु व दिा रू द च द
अत द स रू ग जा य द्रु मा मा यु धा ना॥ द्वा द्वे पि ठा क्षर च्य अदि दल मथ नी
पात मा म यूर्च दी॥ वा हा स्या य गु॥ श्री मं न्न ता वी ने॥ वा क्य॥ अस्मत् प्रदु

सिद्धिजय काम नार्थ या पारायण तपनय थाशक्ति श्री ७ ग्रन्थ दा देवार्च
 नविधीतन् सवीवैधीपरि पुरनमस्तु ॥ पुजायाय ॥ नमस्कार विंदुदक्षिणा
 येका ने केती ॥ स्थाननंदुय ॥ समय सुंदी काय तपनयाय ॥ स्त्री कारयाय
 न्यासलिकाय ॥ वली थोय मतेव ॥ अचमनयाय ॥ सुर्ज साही थाय ॥
 अममर यरुगति द्वीजय काम नया पारायण स्थापनय थाशक्ति श्री ७ ग्र
 चंद देवोर्चन मपुर्णार्थ कृत कमिनी साक्षी रो श्री सुध्या यापनम ॥ पुष्पानम
 बुद्धिपुजा ॥ ऐं काली काली कले श्ररिलो रुंदं शयनम ॥ ऐं वागी श्रन्येनम
 ऐं लक्ष्मि नारायणायनम ॥ ऐं उमा महे श्रायनम ॥ ऐं वल्लु विष्णुसिव
 सांके साहिताय ॥ वलि योनी मुद्रा ॥ नवमूलन ॥ लोत्र ॥ एवं ५ गों य प्रल

नासायः सांके कार्याय तत्पर ॥ पञ्चदे दत्त मा सिद्धि ५ गनार्थ
 नमस्तुते ॥ विदु ॥ धनपतिलोलात सिला वथत हय वसुया देवने ल
 धनमंदलार्थि य ॥ गोजातय ॥ पञ्च वलि नपि य ॥ रु अस्त्राय फेद ॥ ल
 धनहाय ॥ रु अस्त्राय फेद ॥ ला हा राय रु अस्त्राय फेद ॥ फेद ३
 मोलथिया विमो धनयाय ॥ मं वं १०० पं वं ला हा राय रु अस्त्राय फेद
 फेद ३ ॥ धेनु मुद्रा कने ॥ पुजा ॥ ऐं रु द यादी योनी मुद्रा कने ॥ धुप दीप
 तय ॥ समयन के ॥ पञ्च मंत्र कने ॥ चैथ च्चान जाके लं ५ रु द यापत जो
 नाव जोने ॥ पञ्च मासाया विप्रदेवि श्वक मयिधी मही न नो जी व प्रचो दया
 मं क ॥ अ यादी अममर यरुगति द्वीजय काम नया मा हा नवमी

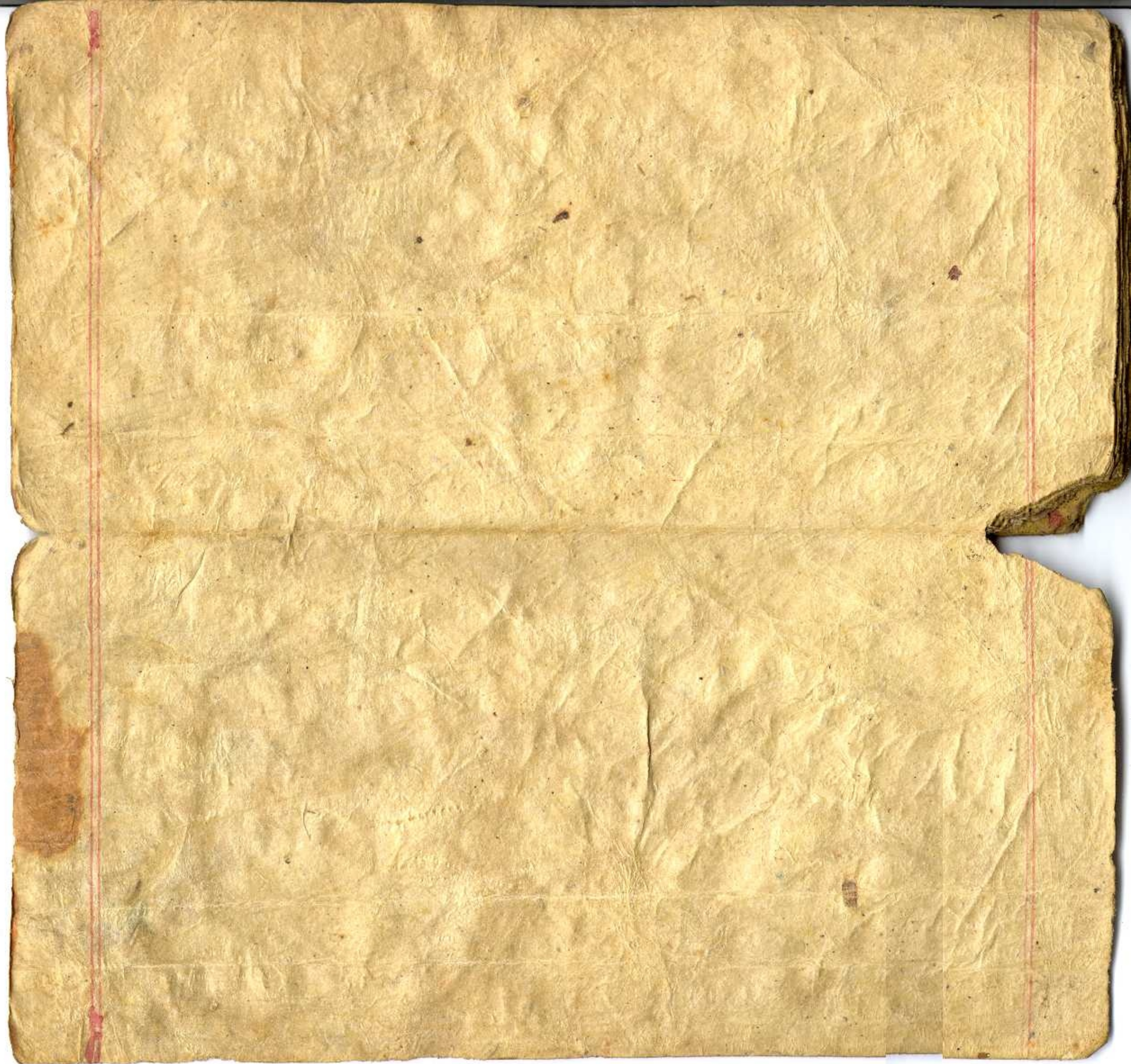
पाचुन्य श्री उग्र चण्ड देवी सांगाय भगन परि वारे अइ मंवाहि दे
व नंदा गवली नय मं हं संप्रदे ॥ ॥ तोलने ॥ दक्षि ना द्या य ॥
पूर्व जन्म कर्मे पाप प्रस जन्म न जायते सर्व पाप विनि मुक्त स्वर्ग
लोक संग द्वाति ॥ मुले हाय व भोग विय ॥ श्री मन्वता परलया
वे मंद द्याया म न विय ॥ ल म य न य ॥ वो क न द्याय ॥ श्री सव ता वि
ने ॥ क्षमा स्तुति याय स्वान को काय ॥ न्या म ली काय सुर्ग सा सी
थाय ॥ कु मारी पुजा याय ॥

नालन पुन ॥ माल को ल म ल पुजा पुन का व वे ला गु ल ना म ता य जा कि

जो ना व चे ने ॥ ऐ न दे वि स व भु ता ना तं ग ति त्वं प्र रा य ता त्वं रा ग्या

पर मे सा ति त्वं दे वि स र रां म म ॥ या दी दे व ग ना सु र्वे पु जा सा दा य सा
र दा ॥ इ ष्ट का म प्र दा ता य पु न रा ग म ता य च ॥ उ ग दे वि न ग ता त स्व
स्थान ग द्ध पु जि ता स म्ब त् स र वे ती ते पु पु न रा ग म ना य च ॥ क्ष म स्तु
सर्व म न्त्रा य नि त्या न द क रा य च ध र्मा र्थ का म मो क्षार्थ पु न रा ग म ना
य च ॥ पु जा या ना व न म स्का र या य ॥ दे व स न के ॥ वा च न का य ॥ अ
स्तु त्वं दे ग सि दि जय का प्र न या म हा द सा मि पा र व न्य य था ॥
शक्ति श्री उग्र चण्ड देवी वाचन संप्रदाय श्री अनेक मुमुक्षु तं मस्तु ॥ क

लसयालंघनदेवताअभिषेकविय ॥ ॥ सगतामोहनिहाय ॥ न
वलासाहाय ॥ ॥ यवतअभिषेककाय ॥ चदनसिपुरसगतामोहनीति
य ॥ त्मानकाय ॥ ॐ भद्रमनयाय श्रीसम्यक्तविने ॥ कुंभलवहा ॥
देवताहाय ॥ समयकाय ॥ तर्पणपाय ॥ स्त्रीकारयाय ॥ न्यातैलि
काय वलीथोय ॥ सूर्यसाक्षी ॥ अस्मत्षडगतिद्रिजयकामनया
य हादमीपारवन्त्ययथासक्ति श्रीगुरुचंदादेव्याचनमैपुनार्थिकृत
कर्मनि साक्षीने श्रीसूर्यार्यनमः प्रष्टुम ॥ ॥ धृतिचालनावधि





શ્રી ૪૫ માર્ગ

1.026

ASHA ARCHIVES